ध्रुविका

राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र
हेंडलेंड सडा, वास्को-द-गामा, गोवा

अनुक्रमणिका

निदेशक का संदेश	...03
संपादकीय	...04
एनसीपीओआर स्थापना दिवस	...05
आज़ादी का अमृत महोत्सव एवं राजभाषा हिन्दी - लखन राठौर	...06-08
हिन्दी में अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) शिक्षा के दूरगामी प्रभाव- ख्याति चौरसिया	...09-10
अंटार्कटिक गतिविधियाँ	...11-13
● डीब्रीफिंग समारोह	...11
● अंटार्कटिका दिवस	...12
● द्विभाषी डाक टिकट	...13
भारत के अमृत महोत्सव में राजभाषा हिन्दी की भूमिका- विमलेश चौहान	...14-15
राजभाषा हिन्दी की गतिविधियाँ	...16-27
● हिन्दी पखवाड़ा	...16
● राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार	...17
● नराकास, दक्षिण गोवा हेतु आयोजित कार्यक्रम	...18
● हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएँ	...19-24
● राज्यस्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	...25
● विश्व हिन्दी दिवस	...25
● विश्व मातृभाषा दिवस	...26
● एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला	...27
हिन्दी तथा मातृभाषा में शिक्षा क्यों और कैसे?- साहिना गाजी	...28-29
एनसीपीओआर की अन्य गतिविधियाँ	...30
राष्ट्रीय पर्व एवं दिवस	...30-31
स्वच्छ सागर अभियान	...32
संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी - कावेरी कुंबार	...33-36
हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता - सत्यजीत सिंह सैनी	...36-37
पुरस्कार एवं कार्यक्रम	...38-40
पेंटिंग - संगीता राणे एवं प्रिया राहुल वत्स	...40-41

निदेशक का संदेश

हमारे संस्थान की वार्षिक हिंदी पत्रिका का चतुर्थ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए एक बार फिर बहुत हर्ष हो रहा है। पत्रिका के पिछले सभी अंक आप सभी ने पसंद किए, यह हमारे लिए संतोष - मिश्रित गौरव की बात है। आपके इसी स्नेह के बल पर पत्रिका के इस नवीनतम अंक का सृजन और भी अधिक जानकारियों, तथ्यों, साहित्य रचनाओं और चित्रों के साथ पुनः किया गया है। मुझे पूर्ण आशा है कि ध्रुविका का यह अंक भी आपकी प्रशंसा पाने में खरा उतरेगा।

शुभकामनाओं के साथ

(डॉ. तम्बान मेलत)

संपादकीय

राजभाषा हिंदी के प्रसार के अपने मूल उद्देश्य की संकल्पना के साथ नूतन कलेवर में ध्रुविका का ताजा अंक आपके लिए तैयार है। ध्रुविका की पिछली चार वर्षो की सार्थक सतत यात्रा अनवरत जारी है। इस पत्रिका के माध्यम से एनसीपीओआर में कार्यरत लोगों के साथ साथ अन्य संबद्ध साहित्यकारों को भी ध्रुविका में अपने विचार रखने का अवसर मिलता है। अतः संस्थान में आयोजित हुई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं द्वारा लिखित सर्वश्रेष्ठ आलेखों को ध्रुविका के इस अंक में शामिल किया गया है। साथ ही, हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के साक्ष्य प्रस्तुत करते संस्थान के हिंदी से संबद्ध विविध कार्यक्रमों के फोटो भी इस अंक में देखे जा सकते हैं। आकर्षक काव्य रचनाओं, गौरवान्वित करते पुरस्कारों के समाचारों, संस्थान की विविध गतिविधियों के मनमोहक चित्रों, आदि से सुसज्जित पुष्पगुच्छ रूपी पत्रिका ध्रुविका का यह अंक निश्चित ही आपका मन मोह लेगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

शुभकामनाओं सहित सादर

(डॉ. रवि मिश्रा)

राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र स्थापना दिवस

एनसीपीओआर ने 5 अप्रैल 2022 को अपना 22वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर संस्थान में विभिन्न वैज्ञानिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में एनसीपीओआर सहित विभिन्न संस्थानो के 200 से अधिक लोग शामिल हुए। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने इस महत्वपूर्ण अवसर पर सभा को ऑनलाइन संबोधित किया।

आजादी का अमृत महोत्सव एवं राजभाषा हिन्दी

''आजादी का अमृत महोत्सव, हम सब को मिलकर मनाना है।
जन-जन की भागीदारी से, इसको सफल बनाना है।''

प्रस्तावना: भारत प्राचीन काल से ही सोने की चिड़िया कहा जाता रहा है, जो कुछ धन- सम्पदा भारत के पास मौजूद है, कहीं किसी ओर देश के पास नहीं है। आज हम बड़ी-बड़ी ऊँचाइयों को भारत के नाम के साथ देखते हैं। प्राचीन भारत,मध्य भारत एवं आधुनिक भारत का प्रारूप निरंतर बदलता जा रहा है। आजादी के पलों का अनुभव हम कर रहे हैं। ये आजादी हमे बड़े कठिन परिश्रम एवं वीर देशभक्तों, सेनानियों एवं महापुरुषों के प्रयासों से मिली है। आज हिन्दी भाषा का क्षेत्र विस्तृत हुआ। हिन्दी को आज प्रमुख भाषा के रूप में अपनाया जा रहा है।

देश की ऊँची शान करें, हम हिन्दी में काम करें।

2. आजादी का अमृत महोत्सव: आज हम आजादी के 75 वर्षा पूर्ण कर चुके हैं। इस लिए देश के प्रधानमंत्री मोदी जी ने 12 मार्च 2022 को साबरमती आश्रम अहमदाबाद से आजादी को अमृत महोत्सव को पूरे देश में मनाने का ऐलान किया, यह महोत्सव 75 सप्ताहों तक चलेगा।

3. हिन्दी का विकास: अधिकांश क्षेत्र में हिन्दी का विकास प्राचीन काल से माना जाता है।, हिन्दी का विकास देवनागरी लिपि के अवहृढ़ हिन्दी प्रारूप से हुआ है। हिन्दी के अधिकांश कवियों ने हिन्दी के परिवेश का ऐसा क्षेत्र प्रस्तुत किया जो हिन्दी के विकास को आगे तक ले जाने का कारण भा, रहीम, सुरदास, केशवदास, बिहारी आदि कवियों के दोहे आज भी जनमानस के हृदय में छाप छोड़े हुए हैं।

4. आजादी के अमृत महोत्सव का उद्देश्य: आजादी को प्राप्त करने में हमारे देश को ब्रिटिश साम्राज्य से संघर्ष का समाना करना पड़ा वह देश की सपूतों एवं देशभक्तों तथा सेनानियों का कठिन प्रयासों से हमे आजादी मिली इस आजादी के अमृत महोत्सव को मनाने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।-

1) हमारे भारत देश के वीर देश भक्तों को याद करना।
2) भारत देश ने 75 वर्षों में 245 उपलब्धियां हासिल की।
3) आजादी के लिए किए गए प्रयासों को सजीव चित्रण करना।
4) देश के युवाओं को आजादी के महत्व से परिचित करना।
5) विश्व सभी देशों की स्थिति में भारत की स्थिति को प्रस्तुत करना।

5. हिन्दी के विकास काल का गौरव: हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाला भाषा के आधार पर विश्व में दुसरा स्थान रखती है। यह विश्व के अनेक देशी हिन्दी का विश्वविद्यालयों का विकास किया गया है। हिन्दी आज सभी क्षेत्रों में भारत का प्रतिनिधित्व कर रही है। आज हिंदी के परिवेश को अपने देश भाषा का गौरव प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद 343 में हिन्दी को राजभाषा के रूप में माना गया है।

''सौंधी सुगंध मीठी सी भाषा, गर्व से कहो हिन्दी है मेरी भाषा।''

6. हिन्दी भारत की राजभाषा: आज भारत देश में सभी राज्यों को भाषायी स्वतंत्रता है। जहाँ हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाया गया है। पर हिन्दी को संविधान मे अनुच्छेद 343 के आधार का दर्जा दिया गया है। वह राज्य विशेष से अलग होकर हिन्दी के प्रयोग किया जा राजभाषा रहा है।

''स्वतंत्र समाज की एक भाषा, हिन्दी है राजभाषा।''

7. हिन्दी भाषा को विस्तृत करने के लिए किए गए प्रयास-

आज हिन्दी के क्षेत्र को भारत सरकार ने अनेक हिन्दी उपयोगी कार्यक्रमों के माध्यम से देश विदेशों में इसे आम जनों के बीच पहुँचाया है। जो विश्व स्तर पर हिन्दी के महत्व को बढ़ाता है।

1. 14 सितम्बर को राष्ट्रीय हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता हैं। इस विषय में 15 दिनों तक हिन्दी भाषा पखवाड़ा की आयोजन देश भर के सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानो में किया जा रहा है।
2. हिन्दी की आज बहुत पसंद किया जा रहा है। विश्वस्तर पर हिन्दी के लिए सम्मेलन हो रहे है। 10 जनवरी को विश्व हिन्दी मनाया जाता हैं।
3. आज भारत देश मे सभी सरकारी कार्यो को हिन्दी में किया जा रहा है।
4. हिन्दी के विचार व्यक्त करने से हिन्दी दिलो में राज कर रही है।
5. आज आजादी के 75 वर्षों में हिन्दी ने सभी क्षेत्रों में शिक्षा, व्यापार, विज्ञान, कला आदि मे हिन्दी भाषा के महत्व को बढ़ाया है।
6. हिन्दी भाषा पर आज इंटरनेट का उपयोग किया जा रहा है। हिन्दी भाषा के सभी तरह के उपयोग सामने आ रहे है।
7. हिन्दी भाषा जनमानस की सरल एवं सहज भाषा है।

8. आजादी के अमृत महोत्सव की शुरुआत: प्रधानमंत्री मोदी जी ने 12 मार्च 2021 को साबरमती आश्रम से 'दांडी मार्च' को हरी झंडी दिखाकर 'आजादी का अमृत महोत्सव' का उद्घाटन किया। इसके लिए 12 मार्च का दिन इसलिए चुना गया क्योंकि इसी दिन गांधीजी ने ब्रिटिश साम्राज्य के नमक कानून तोड़ने के लिए ऐतिहासिक दांडी यात्रा की शुरुआत अपने सभी साथियों के साथ 24 दिन तक 390 किलोमीटर की कठिन पैदल यात्रा के बाद दांडी नामक स्थान पर नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ा। यह दिन भारत के गौरव का दिन था।

9. हिन्दी भाषा की शैली: हिन्दी भाषा प्राचीन देवनागरी भाषा से विकसित भाषा है। यह हिन्दी की शैली अवहट्ठ है। हिन्दी के अनेक स्वरूप देश में फैले हुए हैं। यह खड़ी बोली अवधि मगही आदि स्वरूप में देखी जाती है। हिन्दी को जन सामान्य के विकास के क्रम की भाषा माना गया है। हिन्दी भाषा इतनी सरल एवं सहज है कि जनसाधारण को भी यह भाषा बहुत भाती है। यह भाषा विशेष मार्ग का स्वरूप है जो हिन्दी के निबंध लेखन एवं कहानियों को आज पढ़ने वालो को बहुत ही आनंद की अनुभूति कराती है। हिन्दी ने स्वतंत्रता मे बहुत ही अहम भूमिका निर्वहन किया है। हिन्दी सामाचार पत्रों के माध्यम रही एवं विशेष स्वतंत्रता अभियान के समय जनता को एकत्र करने का साधन बनी। आज हिन्दी का क्षेत्र दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, हिन्दी भाषा के अनेक कार्यक्रमों के माध्यमों से हिन्दी का क्षेत्र बहुत उपयोगी बन गया है।

उपसंहार: आजादी के 75 वर्षों में हिन्दी भाषा का योगदान अतुलनीय रहा है। हिन्दी ने विश्व स्तर अपनी पहचान बना ली है। यहां तक की हिन्दी मे कवि सम्मेलनों का आयोजन विश्व पर किया जा रहा है। भारत के उन वीर देशभक्तो के लिए कवि प्रदीप की कवितां की चंद पक्तियो से आभार में कुछ वाक्य:-

''ऐ मेरे वतन के लोगो जरा आँख में भर लो पानी,
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी।''

यह भारत की आजादी के अमृत महोत्सव को हिन्दी भाषा के महत्व को विशेष भूमिका रही है। हम सौभाग्यशाली है; हिन्दी भाषा हमारी प्रमुख भाषा है एवं हम हिन्दुस्तानी हिन्दी के कारण ही हमारी पहचान है।

''तुम मुझे खून दो, मै तुम्हे आजादी दूँग।''   - सुभाष चंद्र बोस

मैं अपने आप को गर्व से भारतवासी कहता हूँ यहाँ हिन्दी के क्षेत्र को विशेष महत्व के रूप 14 सितम्बर हिन्दी दिवस मनाया जाता है। एवं अखण्डता में एकता का माध्यम हमारी भाषा हिन्दी हमे एक साथ भारतीय होने का गौरव देती है।

अखंडता की मिसाल देश का गौरव मिलती है यह हिन्दी को विशेष महत्व का प्रतिपादन करती है- भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हिन्दी भाषा को राष्ट्र की भाषा बनाने पर विशेष बल दिया। यह भाषा अपने भारतीय हिन्दी भाषा की उल्लेखनीय स्थान विश्व के स्तर पर बढ़ते हिन्दी भाषा के उपयोग एवं विकास के कारण हुआ है। हिन्दी भाषा पर 75 वर्षों मे अनेक उल्लेखनीय माध्यमों का विकास आज के विशेष महत्वों पर किया गया, अधिकांश देशो एवं भारत, पाकिस्तान, नेपाल, अमेरिक बहरीन, त्रिनानंद एवं टोवैगो, जैसे देशो से आज हिन्दी का विकास निरंतर हुआ है। हिन्दी की परिभाषा हिन्दी उत्तर भारत में पूर्णता रूप से विकसित हो एवं विश्व की आज हिंदी प्रमुख भाषाओं में शामिल हैं। भारत सरकार ने हिन्दी भाषा के विकास में अनेक कार्यक्रम आयोजित करती रहती है। अतः हिन्दी भाषा आजादी के अमृत महोत्सव में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

''हिन्दी है मेरी राजभाषा, हिन्दी ही है भाग्य विधाता।''

लखन राठौर
गोवा शिपयार्ड

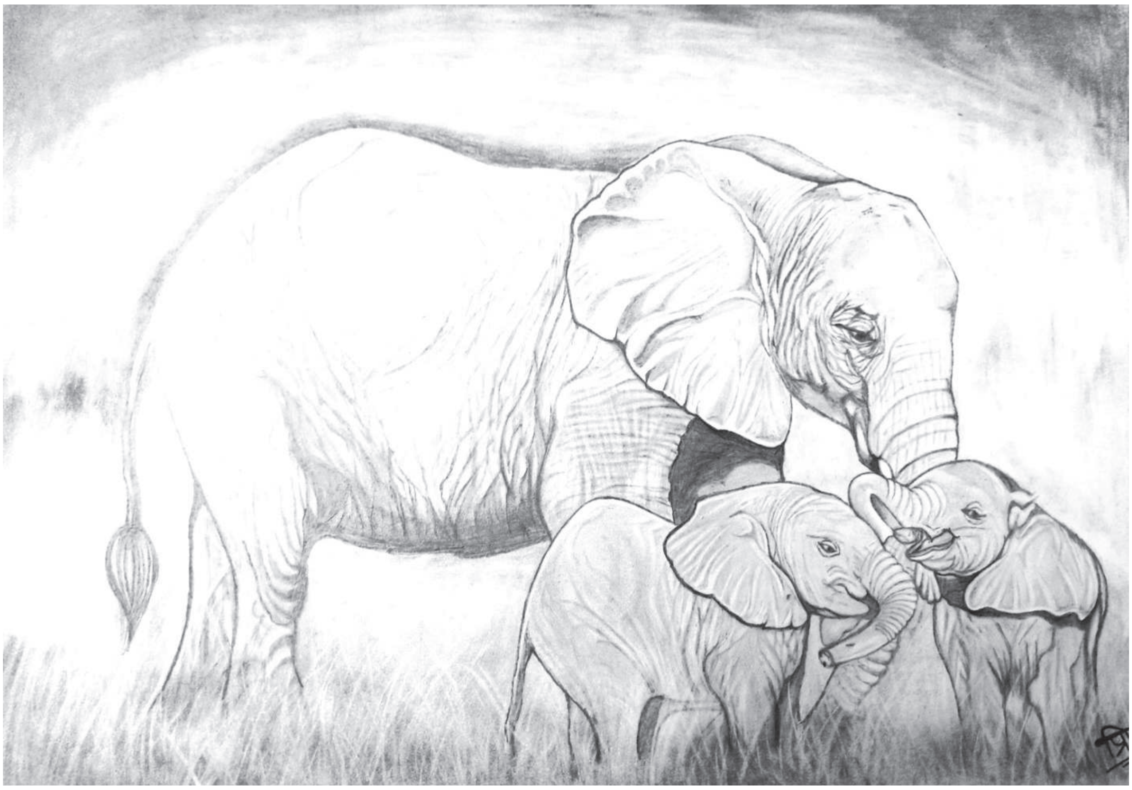

प्रिया राहुल वत्स

हिन्दी में अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) शिक्षा के दूरगामी प्रभाव

''मानव मस्तिष्क अनेक विचारों एवं भावनाओं का भंडार है। यह हमारे शरीर और उसके अन्य अंगों को नियंत्रित करता है और हमें नवीनता अनुभव कराता है। लेकिन इन सभी भावों को नियंत्रित करने के लिए उन्हें रूप प्रदान करने के लिए हमें एक माध्यम की आवश्यकता है और भाषा से बेहतर और क्या माध्यम हो सकता है? समय और काल के अनुसार भाषा ने भी कई रूप धारण किए। उसमें विभिन्न प्रांतो, विभिन्न विचारों के रंग चढ़े और निरंतर विकास के पथ पर वह अग्रसर होता गया भाषा की खूबी यह है कि वह हमारे दाँत के समान है। अपने विकास के दौरान वह कुछ होता खोता है, कुछ अपनाता है, सुंदर भी बन सकता है कुरूप भी। वह अपने प्रयोक्ता के अनुरूप अपने को ढालता है। दाँत समान उसके भी अनेक प्रयोग हैं। भाषा अभिव्यक्ति, संचार और विकास कामाध्यम है। आज के इस अति स्पर्धात्मक व्यक्ति, संस्था एवं राष्ट्र के विकास वातावरण में यह एक सशस्त्र औजार है, बस हमें आवश्यकता है उसकी शक्ति को पहचानना और उसे सही दिशा देना। विश्व की अनेक प्रमुख भाषाओं में हिन्दी की भी गिनती की जाती है। हिन्दी की सबसे बड़ी शक्ति उसकी लिपि है। लिपि इतनी सरल है कि कोई भी उसे आसानी से सीख सकता है। अंग्रेजी भाषा में ज्यादातर शब्दों की वर्तनी उनके उच्चारण से हिन्दी अलग है। लेकिन हिन्दी में आप शब्दों को जैसे उच्चारित करते हैं, वैसे ही लिखते हैं। इसीलिए हिन्दी आज केवल लोकप्रिय हो रही है। वह अपने आप को कारोबार की भाषा ही नहीं अपितु ज्ञान विज्ञान की भाषा के रूप में स्थापित कर रही है। आज न केवल भाषा व्यक्ति के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है बल्कि यह राष्ट्र के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। आज हिन्दी के हुए बढ़ते हुए प्रभाव का असर हमारे जीवन से जुड़े लगभग समस्त क्षेत्रों में देखा जा सकता है। उन्ही क्षेत्रों में से एक प्रमुख क्षेत्र है - शिक्षा जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य के लिए ज्ञानार्जन की आवश्यकता होती है। ज्ञानार्जन का मूल स्रोत शिक्षा केन्द्र और वैज्ञानिक सोच है। यदि हम विज्ञान विषय पर बात करें तो पाते है कि न केवल सम्पूर्ण पृथ्वी अपितु सम्पूर्ण ब्रह्मांड का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जो विज्ञान अछूता हो। विज्ञान की अनेक शाखाएँ होती हैं। उन्ही अनगित शाखाओं हम के प्रभाव में से एक है।''

''अभियांत्रिकी जिसे हम अंग्रेजी में इंजीनियरिंग'' भी कहते है। ''अभियांत्रिकी विज्ञान की वह भाषा शाखा है, जो हमारे जीवन की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करने एवं विभिन्न समस्याओं का श्रेष्ठतम् समाधान प्रस्तुत करता है। अभियांत्रिकी एक कला है और विज्ञान भी जिसकी सहायता से पदार्थ के गुणों संररचनाओं और यंत्र निर्माण में, जिनके लिए यौगिकी के सिंद्धात और उपयोग आवश्यक है, मनुष्य के उपयोग हेतु बनाया जा सकता है। अभियांत्रिकी की अनेक शाखाएँ है, जैसे कृषि, खनन, विद्युत, यांत्रिक, सिविल, सैनिक, समुद्री, भूगर्भ शास्त्र, संचार इलेक्ट्रानिक्स, कम्प्यूटर खनिज सम्बंधी, प्रबंध, वायुवीय, जहाज, और अन्य शाखाएं। यदि हम भारतीय अभियंत्रिकी - शिक्षा के सर्वप्रथमः इतिहास को देखे तो इसका उल्लेख सर्व प्रथम 1847 में मिलता है, उस वर्ष रुड़की में भागसन कालेज ऑफ सिविल इंजीनियरिंग की स्थापना हुई थी जो सन् 1949 मे देश की पहली अभियांत्रिकी विश्वविद्यालय बनी। उसके बाद अभियंत्रिकी का बढ़ता हुआ सिलसिला थमा नहीं। आज जिस प्रकार अभियांत्रिकी शिक्षा का विश्व स्तर पर प्रभाव बढ़ रहा है उसी प्रकार हिन्दी भाषा का भी प्रभाव बढ़ा है। आज न केवल भारत अपितु फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, गुआना कनाडा व अन्य देशों में भी अधिकांश लोगों द्वारा हिन्दी बोली, समझी व लिखी जाती है, और निरंतर हिन्दी का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, जो कि एक सकारात्मक परिणाम है।

''जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का ज्ञान नहीं वह देश उन्नत नहीं हो सकता।'' डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा कहे गये ये शब्द आज भी उतने सार्थक है, जितने सार्थक ये पहले थे। इसी मूलमंत्र के आधार पर वर्तमान सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आधार शिला रखी। जिसमें हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक, अभियांत्रिकी एवं अन्य जटिल विषयों के अध्ययन का प्रावधान भी है। जिसके प्रभावशाली दूरगामी प्रभाव होगें। यदि अभियांत्रिकी शिक्षा को हिन्दी भाषा में पढ़ाया जाता है, तो इसके अनेक दूरगामी प्रभाव होंगे। जैसे- वे छात्र जिनकी शिक्षा का माध्यम हिन्दी या अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ है, जिस कारण वे

अंग्रेजी माध्यम में संचालित हो रहे अभियांत्रिकी पाठ्यक्रमों का चुनाव नहीं करते थे उन्हे अब इस समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसका दूरगामी प्रभाव यह होगा कि अभियांत्रिकी को बढ़ावा मिलेगा एवं देश के विकास की गति तीव्र होगी। उच्च अभियांत्रिकी शिक्षा में हिन्दी माध्यम विकल्प होने से प्राथमिक एवं बुनियादी शिक्षा में हिन्दी माध्यम के छात्रों में विश्वास बढ़ेगा वही दूसरी ओर नए दखिला लेने वाले छात्रों में हिन्दी का प्रभाव व प्रसार बढ़ेगा। जिससे देश को सशक्त एवं सबल होने में सहायता मिलेगी।

हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा देने के लिए विश्वविद्यालयों में संरचनात्मक एवं संगठनात्मक स्तर पर अनेक परिवर्तन किए जाएंगे जिससे हिन्दी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को बल प्राप्त हो। हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा देने से विश्व-स्तर पर भारतीय छात्रों का अपनी भाषा के प्रति सम्मान का भाव बढ़ेगा, जिससे देश के प्रति उनकी सम्मान की भावना का विकास होगा। अर्थात् राष्ट्रीयता, को बल मिलेगा। हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा देने से अनावश्यक रूप से पलायन हो रहे छात्रों की संख्या में काफी सीमा तक गिरावट आयेगी, उन्हें शिक्षा की उपलब्धता एवं गुणवता आशानी पूर्वक उपलब्ध हो सकेगी। हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा देने से उन ग्रामीण छात्रों को के विशेष फायदा होगा जो अंग्रेजी माध्यम होने प्रदर्शन अपना शैक्षिक शैज्ञानिक कारण अपनी क्षमता प्रदर्शन सही तरह से नहीं दिखा पाते थे, वे का सही उपयोग सरल एवं सहजता पूर्वक अपनी ही भाषा में कर सकेगे। हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा देने का दूरगामी प्रभाव यह भी होगा कि जहाँ एक ओर छात्र सशक्त और आत्मनिर्भर बनेंगे वहीं दूसरी ओर आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना भी पूर्ण होगी। हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा देने से अभियांत्रिकी का विकास होगा एवं हिन्दी को विश्वस्तर पर सम्मान मिलेगा, जिसका सकारात्मक दूरगामी प्रभाव पड़ेगा। हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा देने से सोशल मीडिया के माध्यम से अभियांत्रिकी के जटिल सिद्धांत व नियम जन-जन तक पहुँच सकते है, जिससे सामान्य जन मानव भी अभियांत्रिकी का सही व उचित उपयोग कर लाभान्वित हो सकता है इस प्रकार हमने हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा के सकारात्मक दूरगामी परिणाम जाने पर इसका एक दूरगामी प्रभाव यह भी हो सकता है कि पढ़े-लिखे, कुशल अभियांत्रिकों इंजीनियरो की संख्या इतनी ज्यादा न हो जाये, कि बेरोजगारी की समस्या जटिल हो जाए, इसलिए यह आवश्यक है कि इसके समान्तर रोजगार के अवसरों को बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित करना होगा, एवं हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा के दूरगामी कुप्रभावों का समाधान पहले ही तैयार कर लिये जाएं। अन्ततः हिन्दी में अभियांत्रिकी से देश में शैक्षणिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक व अन्य क्षेत्रों में दूरगामी प्रभाव पड़ेगा। जहाँ एक ओर हिन्दी को विश्व स्तर पर सम्मान मिलेगा वहीं दूसरी ओर छात्रों को अभियांत्रिकी शिक्षा में सरलता सहजता के साथ आत्मसम्मान की भावना का उदय भी होगा। बंछित वर्गो में अभियांत्रिकी शिक्षा ग्रहण हेतु रुचि बढ़ेगी एवं वे भी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम होंगे। हिन्दी में अभियांत्रिकी शिक्षा के सफल दूरगामी परिणाम निकलकर आयेंगे।

ख्याति चौरसिया

सहायक प्रबंधक (सिंडीकेट बँक)

अंटार्कटिक गतिविधियाँ

डीब्रीफिंग समारोह

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने 25 अगस्त, 2022 को एनसीपीओआर में अंटार्कटिका के लिए भारतीय वैज्ञानिक अभियान के डीब्रीफिंग समारोह का उद्घाटन किया। यह समारोह अंटार्कटिक सदस्यों के भारतीय अंटार्कटिक कार्यक्रम में उनके बहुमूल्य योगदान के लिए आयोजित किया गया। इस दौरान अंटार्कटिक दल 38, 39, 40 और 41-आईएसईए के 120 से अधिक अभियान सदस्यों को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय भारत सरकार के सचिव और अन्य प्रतिनिधियों द्वारा सम्मानित किया गया।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने श्री ललित के. अहिरवार, वैज्ञानिक ई एनसीपीओआर द्वारा अंटार्कटिक संचालन समूह के सहयोग से श्री ललित के. अहिरवार द्वारा डिज़ाइन की गई भारतीय अंटार्कटिक संचालन के लिए एक वेबसाइट लॉन्च की।

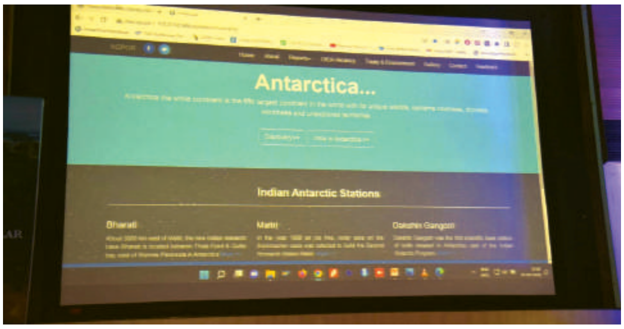

अंटार्कटिका दिवस 2022

एनसीपीओआर में अंटार्कटिका दिवस 1 एवं 2 दिसंबर 2022 को मनाया गया। इस अवसर पर गोवा के राज्यपाल महामहिम श्री पी. एस. श्रीधरन पिल्लई, मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उन्होने अंटार्कटिका दिवस के अवसर पर एनसीपीओआर द्वारा आयोजित दो दिवसीय वैज्ञानिक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मोहम्मद सईद राशिद, पोस्टमास्टर जनरल, गोवा, डॉ. तम्बान मेलत, निदेशक, एनसीपीओआर, एवं एम. जावेद बेग, पूर्व निदेशक, एनसीपीओआर और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इस प्रदर्शनी में संस्थान के विभिन्न अनुभागों / विभागों द्वारा रचनात्मक मॉडल और पोस्टर के माध्यम से एनसीपीओआर में उनके शोध कार्य और लॉजिस्टिक गतिविधियों को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनी को दिखाया गया। प्रदर्शनी के सभी मॉडल पर्यावरण के अनुकूल, बायोडिग्रेडेबल, पुनर्नवीनीकरण सामग्री से बनाए गए थे।

द्विभाषी डाक टिकट

अंटार्कटिका में भारतीय महामहिम अनुसंधान केंद्र ''**भारती**''के एक दशक सफलतापूर्वक सम्पूर्ण होने पर भारतीय डाक विभाग द्वारा अंटार्कटिका दिवस के शुभ अवसर पर गोवा के राज्यपाल महामहिम श्री पी. एस. श्रीधरन पिल्लई, श्री. सईद राशिद, पोस्टमास्टर जनरल, गोवा, एवं डॉ. तम्बान मेलत, निदेशक एनसीपीओआर की उपस्थिति में द्विभाषी डाक टिकट जारी किया गया।

प्रिया राहुल वत्स

भारत के अमृत महोत्सव में राजभाषा हिन्दी की भूमिका

''सबका साथ, सबका विकास।
सबका विश्वास, सबका प्रयास॥''

आजादी के अमृत महोत्सव की 5 थीम-

- स्वतंत्रता संग्राम
- विचार 75
- संकल्प 75
- एक्शन 75
- उपलब्धियाँ 75

आजादी के अमृत महोत्सव में हिन्दी की भूमिका का वर्णन करने से पहले मैं निम्नलिखित बिन्दुओं के बारे में संक्षेप में बताना चाहती हूँ।

आजादी का अमृत महोत्सव क्या है, यह क्यों मनाया जा रहा हैं? आजादी के आन्दोलन में राजभाषा हिन्दी की क्या भूमिका रही? भारत की आत्मा क्यों है हिन्दी?

आजादी का अमृत महोत्सव आजादी की ऊर्जा का अमृत। यानी स्वतंत्रता सैनानियों की स्वाधीनता का अमृत नए विचारों का अमृत नए सकल्पों का अमृत' और 'आत्मनिर्भरता का अमृत है। ये महोत्सव 'राष्ट्र के जागरण का अमृत' है। यह महोत्सव 'वैश्विक शान्ति के विकास' का अमृत है।

आजादी का अमृत महोत्सव 75 वर्ष सप्ताह का भव्य उत्सव है। जिसका हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अहमदाबाद के साबरमती के आश्रम से उद्घाटन किया था। इसके माध्यम से देश के आजादी के आंदोलन में जान न्यौछावर करने वाले लाखों शहीदों को याद किया जा रहा है। आजादी के इस आन्दोलन में राजनेताओं ने ही बलिदान नहीं दिया है, बल्कि देश के साहित्यकारों, लेखकों, कवियों, और छात्राओं व बकीलों ने भी अपने प्राणों की आहुति लगा दी। राष्ट्रगान के रचयिता 'कवि गुरू रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी कविताओं के माध्यम से देश के लोगों में देश-प्रेम की जागृत की थी। भारत की भाषाएँ नदियां है, तो हिन्दी महानदी है।

कवि गुरु रविन्द्र नाथ टैगोर भारतीय राष्ट्रगीत के 'वन्दे मातरम' के रचयिता बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यास कार बंकिम चन्द्र चटर्जी' ने तो अपनी रचनाओं के माध्यम से अंग्रेजों के नाक में दम कर दी थी। भारत के राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने अपनी रचनाओं से देश के मतवालों में आजादी का जोश भर दिया था। उनकी यह कविता आज भी लोगों में जोश भरने का काम करती है -

''जो भरा नहीं है, भावों से बहती है जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।''

''कलम के सिपाही' मुंशी प्रेमचन्द्र ने देश में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ देश के लोगों राष्ट्र-प्रेम जगाया था। उनकी 'रंगभूमि' और 'कर्मभूमि रचनाओं में खूब देश-प्रेम देखने को मिलता है। उनकी पहला कहानी संग्रह 'सोने वतन' मतलब वतन का दर्द अंग्रेजों ने आग में डालकर जला दिया था।'' आजादी की इस जंग में पुरुषों ने ही नहीं बल्कि महिलाओं ने भी अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। ऐसे ही कवयित्री एवं स्वतंत्रता सेनानी 'सुभद्रा कुमारी चौहान' जिन्होंने गाँधी जी के साथ असहयोग आन्दोलन में भाग लिया था। उनकी कविता 'झाँसी की रानी, आजादी के हर बोलों की हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

आधुनिक युग के पितामह एवं नव जागरण काल के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी मातृभाषा (निजभाषा) का महत्व बताते हुए एक कविता लिखी -

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हियं को सूल।''
''विविध भाषा, शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देखन से ले करहु, भाषा माहि प्रचार।''

भारतेन्दु जी को अपनी भाषा का महत्त्व अच्छे से पता था, इसीलिए वह हमेशा कहते थे कि दूसरी भाषा से ज्ञान-विज्ञान लेकर अपनी भाषा में उसका प्रयोग करो। हो कभी अंग्रेजी के विरोधी नहीं थे। अंग्रेजों के प्रभुत्व के विरोधी थे -

सब भाषा का सम्मान करो पर हिन्दी से प्यार करो वह उनको औपनिवेषिकता की अच्छी समझ थी। परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा बने हमेशा परतंत्रता आती है। गाँधी जी ने हमेशा संवाद के लिए हिन्दी भाषा को ही चुना जबकि उनकी उच्च शिक्षा अंग्रेजी में हुई थी। वर्षों अफ्रीका में बैरिस्टरी करने के बाद भी उनके अन्दर हिन्दी, हिन्दुस्तान तथा भारतीयता के लिए बेहद लगाव था। पं. जवाहर लाल नेहरू तो अंग्रेजी के ज्ञाता थे, फिर भी ये दोनों नेता हमेशा हिन्दी में ही बात करते थे, क्योंकि इनको हिन्दी का महत्त्व पता था।

राजभाषा से तात्पर्य- सरकारी कामकाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा। 14 सितम्बर 1959 को हिन्दी को संविध में दर्जा दिया गया। हिन्दी केवल एक सदी की भाषा नहीं है बल्कि सदियों से बोली जाने वाली भाषा है। 1519 सितम्बर 1953 से ॥ हिन्दी दिवस मनाया जाने लगा। इस दिवस को मनाने का उद्दे श्य कि राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो और जल्दी से हिन्दी को राष्ट्रभाषा हिन्दी का आधिकारिक दर्जा प्राप्त हो जाए।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में से दूसरे स्थान पर आती है। क्योंकि हिन्दी आजादी के समय सम्पर्क भाषा रही है हिन्दी सबसे सहज, सुगम एवं आसान भाषा है। यह सबसे अधिक वैज्ञानिक है। देवनागरी लिपि संसार की समस्त लिपियों में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। राजभाषा हिन्दी का वर्णन करने से पहले यदि हम उन हिन्दी के साहित्यकारों का वर्णन न करें तो शायद यह निबंध पूरा ही न होता। हिन्दी के विषय में महत्व देते हुए कहते हैं।

''हिन्दी भाषा का विकास विविध धर्मों और विभिन्न साहित्यकारों के सहयोग से हुआ है,
यह किसी विशिष्ट धर्म, समुदाय या प्रदेश की भाषा नहीं है, बल्कि भारतीयों की भाषा है।''

डॉ. फादर कामिल बुल्के ने लिखा कि 'हिन्दी महारानी, अंग्रेजी नौकरानी और संस्कृत को माँ का दर्जा दिय। आज 75वां आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है और अभी भी हमारे देश की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है जबकि हर देश की राजभाषा है। अपना राष्ट्रीय प्रतीक, राष्ट्रीय, ध्वज, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय फूल तो फिर अपनी हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा का आधिकारिक दर्जा क्यों नहीं दिला पाये। हम सबका दायित्व बनता है कि हिन्दी भाषा के अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें और अपने बच्चों को हिन्दी से दूर न रखें। आजकल लोग जिस स्कूल में हिन्दी थोड़ी भी ज्यादा बोली जाती है तो उसमें पढ़ाना पसन्द नहीं करते हैं। कैसे क्या हमारी हिन्दी राष्ट्रभाषा बन पाएगी। कितने लोगों ने हिन्दी के माध्यम से अपने देश को आजाद करने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। क्या उन वीर शहीदों का बलिदान ऐसे ही व्यर्थ जाने देंगे। गृह मंत्री अमित शाह जी ने 36वीं राज भाषा समिति में कहा कि आजादी के आन्दोलन में हिन्दी की भूमिका की एक थीम होनी चाहिए, जिससे जिन साहित्यकारों ने इस आन्दोलन को आगे बढाने का कार्य किया, वहाँ की संस्कृति और उ लोगो को उसके बारे में पता चल सके। उन्होंने कहा कि प्रत्येक देश राज्य केंद्र इतिहास को राजभाषा में लिखा जाए, कश्मीर से कन्याकुमारी तक, जिससे प्रत्येक बच्चें को इतिहास पता चल सके और उनके शब्द भंडार में वृद्धि हो। मेरी आंखें उस दिन को देखने के लिए तरस रही है जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रत्येक भारतवासी (हिन्दी) बोलने और समझने लग जाए।

''हिन्दी से है हिन्द, हिन्द से हिन्दुस्तान, सब बोलो मिलकर मेरा भारत देश महान।''
जय हिन्द, जय भारत, वन्दे मातरम

विमलेश चौहान

राजभाषा हिंदी की गतिविधियाँ

हिंदी पखवाड़ा (14 से 29 सितंबर 2022)

राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन 14-29 सितंबर 2022 को किया गया। हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ 14 सितम्बर 2022 को हुआ एवं समापन समारोह 29 सितम्बर 2022 को पुरस्कार वितरण के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर एक हिन्दी -कोंकणी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़ा 2022 के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के सभी वर्ग के अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान संस्थान में सभी को अपना अधिकतम कार्य हिन्दी में करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। 19 सितंबर 2022 को निदेशक एवं मुख्य अतिथि श्रीमती नीलम केंकरे, सदस्य सचिव, नराकास द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ शुभारंभ हुआ। इसके उपरांत प्रतियोगिताओं को आरंभ किया गया।

राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार

हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के पश्चात वर्ष 2021-22 के राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कारों हेतु संस्थान में वर्ष के दौरान हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कार्यों का निरीक्षण किया गया। वर्ष 2021-22 के राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कारों हेतु इस बार हिन्दीतर श्रेणी में बहुत ज्यादा प्रतिस्पर्धा देखी गई। इस वर्ष राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार हेतु 30 से अधिक प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं एवं चयन के उपरांत हिन्दी एवं हिन्दीतर श्रेणी में कुल आठ-आठ अर्थात 16 पुरस्कार दिए गये।

संस्थान के सभी अनुभागों का निरीक्षण एवं सर्वश्रेष्ठ अनुभाग पुरस्कार

एनसीपीओआर में कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में निरंतर प्रगति को देखते हुए वर्ष 2021-22 हेतु हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले अनुभागों को पुरस्कृत करने का निश्चय किया गया। संस्थान के सभी 17 अनुभागों को चयन समिति द्वारा निरीक्षण किया गया एवं सर्वश्रेष्ठ अनुभागों को पुरस्कृत किया गया।

वर्ष 2021-22 के राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार विजेता

क्र.	नाम	पुरस्कार
1.	रविंदर सिंह	प्रथम
2.	साहिना गाज़ी	प्रथम
3.	अंकिता सातोस्कर	द्वितीय
4.	रीना नाईक	द्वितीय
5.	योगेश राय	द्वितीय
6.	सौम्या तारी	द्वितीय
7.	रिया नाईक	द्वितीय
8.	सोनम केलुस्कर	द्वितीय

क्र.	नाम	पुरस्कार
9.	अमन कुमार शर्मा	तृतीय
10.	कौशाम्बी प्रसाद	तृतीय
11.	रुपाली राणे	तृतीय
12.	रीमा कुवालेकर	तृतीय
13.	प्रफिला गांवकर	तृतीय
14.	अर्पणा नाइक	तृतीय
15.	पूजा पेडणेकर	तृतीय
16.	प्रदीप कुमार सिंह	तृतीय

सर्वश्रेष्ठ अनुभाग पुरस्कार

नाम	पुरस्कार
अंटार्कटिक विज्ञान	प्रथम
अंटार्कटिक संचालन	द्वितीय
प्रशासन अनुभाग	द्वितीय

नराकास, दक्षिण गोवा के अंतर्गत आने वाले संस्थानों हेतु आयोजित कार्यक्रम

हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत नराकास, दक्षिण गोवा के अंतर्गत आने वाले कार्यालयों हेतु निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस बार निबंध का विषय - ''भारत के अमृत महोत्सव में राजभाषा हिन्दी की भूमिका'' था। इस प्रतियोगिता में विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त 35 से अधिक प्रविष्टियों के आधार पर विजेताओं का चयन किया गया।

क्रमांक	नाम	कार्यालय का नाम	प्रतियोगिता में स्थान
1	विमलेश चौहान	के.वी.2, वास्को-द-गामा, गोवा	प्रथम
2	सुधाकर तरवे	सीमा-शुल्क कार्यालय, मुर्मुगांव	द्वितीय
3	लखन राठौर	गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, गोवा	द्वितीय
4	महेश सैनी	समुद्री वाणिज्य विभाग, गोवा	तृतीय
5	आर.के.पाण्डे	भारतीय तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, गोवा	तृतीय
6	ललित कुमार	मुख्यालय गोवा नौसेना क्षेत्र, वास्को, गोवा	तृतीय

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएँ

संस्थान में सभी वर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

श्रुत लेखन प्रतियोगिता -हिन्दी पखवाड़ा के दौरान दिनांक 21 सितंबर 2022 को संस्थान के एमटीएस कर्मचारियों हेतु श्रुत लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में सभी एमटीएस कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता में कुल 6 विजेताओं का चयन किया गया।

श्रुत लेखन प्रतियोगिता

क्रमांक	विजेता	पुरस्कार
1.	सुनंदा सूर्यकांत	प्रथम
2.	उमेश हळर्णकर	द्वितीय
3.	सीता आर बांदेकर	द्वितीय
4.	सोनल डी गावड़े	तृतीय
5.	जाधव के	तृतीय
6.	अनिकेत नाईक	तृतीय

वैज्ञानिक शोध कार्यों पर व्यक्तिगत पोस्टर प्रतियोगिता - हिन्दी पखवाड़ा के दौरान दिनांक 21 सितंबर 2022 को संस्थान के वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं द्वारा हिन्दी में वैज्ञानिक कार्यों के प्रदर्शन को बढ़ावा देने हेतु राजभाषा चयन समिति के सदस्यों की उपस्थिति में विभिन्न शोध विषयों पर पोस्टर प्रदर्शन एवं प्रस्तुतीकरण दिया गया। इस प्रतियोगिता में 5 सर्वोत्तम पोस्टरों को चुना गया।

वैज्ञानिक शोध कार्यों पर सर्वश्रेष्ठ पोस्टर विजेता		
क्रमांक	**नाम**	**पुरस्कार**
1.	राहुल दे	सर्वोत्तम पोस्टर
2.	सरत चंद्र त्रिपाठी	सर्वोत्तम पोस्टर
3.	आलोक कुमार सिन्हा	सर्वोत्तम पोस्टर
4.	शबनम चौधरी	सर्वोत्तम पोस्टर
5.	रविदास नाईक	सर्वोत्तम पोस्टर

अनुभाग विभाग पोस्टर प्रतियोगिता -हिन्दी पखवाड़ा के दौरान दिनांक 21 सितंबर 2022 को संस्थान के अनुभागों द्वारा उनके कार्यों एवं शोध कार्यों को राजभाषा चयन समिति के सदस्यों की उपस्थिति में पोस्टर प्रदर्शन एवं प्रस्तुतीकरण दिया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 7 सर्वोत्तम पोस्टरों को चुना गया।

अनुभाग पोस्टर विजेता		
क्रमांक	**नाम**	**पुरस्कार**
1.	हिमालयन हिमांकमंडलीय अनुभाग	सर्वोत्तम पोस्टर
2.	पुरामहासागरीय अनुभाग	सर्वोत्तम पोस्टर
3.	महासागरीय अनुभाग	सर्वोत्तम पोस्टर
4.	जलतापीय अध्ययन अनुभाग	सर्वोत्तम पोस्टर
5.	आर्कटिक अनुभाग	सर्वोत्तमपोस्टर
6.	अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं जनजागरण	सर्वोत्तम पोस्टर
7.	अंटार्कटिक वैज्ञानिक समन्वय	सर्वोत्तम पोस्टर

हिन्दी/हिंदीतर निबंध लेखन प्रतियोगिता - हिन्दी पखवाड़ा के दौरान संस्थान में दिनांक 22 सितंबर 2022 को हिन्दी /हिंदीतर अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन 'हिन्दी एवं मातृभाषा में शिक्षा क्यों और कैसे' विषय पर किया गया। इस प्रतियोगिता में हिन्दी/हिंदीतर के लिए कुल 12 पुरस्कार वितरित किए गए।

निबंध लेखन प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता

क्रमांक	हिन्दी भाषी	हिंदीतर	पुरस्कार
1.	विकास सिंह	युगा घोटगे	प्रथम
2.	विक्रम प्रताप सिंह	पवन शिरोडकर	द्वितीय
3.	सती चौहान	साहिना गाज़ी	द्वितीय
4.	अविराज सिंह जाधव	स्मितेश नेरूरकर	तृतीय
5.	आरिज अहमद	रेशा महाले	तृतीय
6.	सुमित कुमार	रीमा कुवालेकर	तृतीय

टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता - हिन्दी पखवाड़ा के दौरान संस्थान में दिनांक 23 सितंबर 2022 को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन ''कार्यालय में त्रिभाषा सूत्र कार्यान्वयन एवं व्यय हेतु अनुमोदन'' विषय पर किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 6 पुरस्कार वितरित किए गए।

टिप्पणी लेखन विजेता		
क्रमांक	**नाम**	**पुरस्कार**
1.	रवीन्द्र सिंह	प्रथम
2.	अश्वेश मयंकर	द्वितीय
3.	श्वेता मोरजे	द्वितीय
4.	सिद्धेश शिरके	तृतीय
5.	तेजस्विनी पाखिड़े	तृतीय
6.	अंकिता सातोस्कर	तृतीय

क्विज़ प्रतियोगिता - हिन्दी पखवाड़ा के दौरान संस्थान में दिनांक 26 सितंबर 2022 को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता सामान्य ज्ञान, समसामायिक, हिन्दी एवं कार्यालय से संबंधित प्रश्नो पर आधारित थी। इस प्रतियोगिता में लगभग 75 से अधिक प्रतियोगियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कुल 6 पुरस्कार प्रदान किए गए।

प्रतियोगिता विजेता		
क्रमांक	**नाम**	**पुरस्कार**
1.	राहुल घुले	प्रथम
2.	पुरुषोत्तम केणी	द्वितीय
3.	प्रतिभा शेट्ये	द्वितीय
4.	प्रियेश प्रभात	तृतीय
5.	बृजेश देसाई	तृतीय
6.	तारिक एजाज	तृतीय

अनुवाद प्रतियोगिता - हिन्दी पखवाड़ा के दौरान संस्थान में दिनांक 27 सितंबर 2022 सभी अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु ऑनलाइन अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह अनुवाद दैनिक उपयोग में आने वाले शब्दों, वाक्यों, प्रशासनिक, वैज्ञानिक विषय से संबंधित विषय पर दिया गया था। इस प्रतियोगिता में सभी को अनुवाद हेतु ऑनलाइन टूल्स के उपयोग की अनुमति थी। इस प्रतियोगिता में लगभग 75 से अधिक प्रतियोगियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कुल 6 पुरस्कार प्रदान किए गए।

अनुवाद प्रतियोगिता विजेता		
क्रमांक	**नाम**	**पुरस्कार**
1.	अविनाश कुमार	प्रथम
2.	रिया नाईक	द्वितीय
3.	रोहित श्रीवास्तव	द्वितीय
4.	उदय	तृतीय
5.	रेशा माहाले	तृतीय
6.	जूही यादव	तृतीय

भाषण प्रतियोगिता - हिन्दी पखवाड़ा के दौरान संस्थान में दिनांक 23 सितंबर 2022 को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु हिन्दी एवं रोजगार विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 3 पुरस्कार प्रदान किए गए।

भाषण प्रतियोगिता विजेता		
क्रमांक	**नाम**	**पुरस्कार**
1.	नमिता मोरजे	प्रथम
2.	विजेंद्री पाल	द्वितीय
3.	बाला म्हाडगुत	तृतीय

हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह

एनसीपीओआर में हिन्दी पखवाड़ा का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ और 29 सितंबर 2022 को समापन समारोह एनसीपीओआर के सभागार कक्ष में आयोजित किया गया। इस समारोह में मुख्य अथिति प्रो. राजय पवार, केपेम गवर्मेंट कॉलेज, गोवा एवं श्री दामोदर आठलेकर, अधिकारी,आकाशवाणी, गोवा उपस्थित रहे। जिसमें हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नामों की घोषणा की गई एवं इस समारोह में संस्थान के निदेशक एवं मुख्य अतिथियों द्वारा सभी विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह भी वितरित किए गए। इस

अवसर पर संस्थान में एक हिन्दी -कोंकणी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न अनुभागों के प्रमुख, राजभाषा अधिकारी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी,वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी गण उपस्थित रहें। कार्यकम का संचालन राजभाषा अधिकारी रवि मिश्रा ने किया। कार्यक्रम का समापन समारोह मध्यांह भोज के साथ संपन्न हुआ। इस प्रकार हिन्दी पखवाड़ा का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

नराकास, दक्षिण गोवा के तत्वावधान में राज्यस्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

एनसीपीओआर में नराकास, दक्षिण गोवा के तत्वावधान में राज्यस्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन 28 मार्च 2023 को किया गया। इसमें 30 से अधिक संस्थानों के 120 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

डॉ रवि मिश्रा, वैज्ञानिक एवं राजभाषा अधिकारी ने प्रतिभागियों का स्वागत कर अपने विचार साझा किये। इस अवसर पर डॉ स्वाति नागर ने प्रतिभागियो को संस्थान की प्रमुख गतिविधियों से अवगत कराया।

विश्व हिन्दी दिवस 2023

विश्व हिन्दी दिवस 2023 के अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. राहुल मोहन, डॉ. परमानन्द शर्मा, डॉ.बबन इगोले सहित, राजभाषा अधिकारी डॉ. रवि मिश्रा ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

विश्व मातृभाषा दिवस 2023

संस्थान में 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु एक हिन्दी कोंकणी कार्यशाला एवं हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दुनियाभर में भाषा एक ऐसा साधन है, जो लोगों को एक दूसरे से जोड़ता है और उनकी संस्कृति को प्रदर्शित करता है। एक देश में कई मातृभाषा हो सकती हैं। भारत में ही 122 ऐसी भाषाएं हैं, जिनको बोलने वालों की संख्या 10 हजार से ज्यादा है। वहीं 29 भाषाएं ऐसी हैं, जिन्हें 10 लाख लोग बोलते हैं। भाषाओं में हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला, पंजाबी, अरबी, जापानी, रूसी, पुर्तगाली, मंदारिन और स्पैनिश बोली जाती हैं। विश्व में भाषाई व सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने के लिए और कई मातृभाषाओं के प्रति जागरुकता लाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है। वर्ष 1999 में यूनेस्को ने 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के तौर पर मनाने की घोषणा की थी। पहली बार इस दिन को मनाने की शुरुआत बांग्लादेश ने की थी। बाद में वर्ष 2000 से विश्व भर में यह दिन मनाया जाने लगा।

एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला

42 आईएसईए(भारतीय अंटार्कटिक वैज्ञानिक अभियान)की वॉयेज टीम के सदस्यों को ब्रीफिंग के तहत 18 दिसंबर 2022 को राजभाषा परिचय, कार्य और अभ्यास के संबंध में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में सभी सदस्यों को राजभाषा हिन्दी के उपयोग एवं हिन्दी भाषा की बढ़ती लोकप्रियता के बार में बताया गया।

हिन्दी तथा मातृभाषा में शिक्षा क्यों और कैसे?

शिक्षा का असली लक्ष्य लोगों को पढ़ाना और विकसित करना है। शिक्षा का यह लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब इसे उस भाषा में दिया जाए जिसे बच्चा शुरू से समझता है। इस संबंध में मातृभाषा में दी जाने वाली स्कूली शिक्षा अधिक फायदेमंद हो सकती है। उनकी मातृभाषा वह भाषा है जो एक युवा अपने माता-पिता की बातों को सुनकर अनुकरण के माध्यम से सीखता है। यह उसके घर में बोली जाती है, और बच्चे को स्कूल शुरू करने से पहले उसमें बोलना सिखाया जाता है। वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने और सामान्य व्यवहार करने के लिए भी इस भाषा का उपयोग करता है।

मातृभाषा में शिक्षा

एक निश्चित वर्ग, समुदाय या स्थान की मातृभाषा अक्सर वहां बोली जाने वाली भाषा होती है। इस भाषा का प्रयोग घर में, घर के बाहर, स्कूल में दोस्तों के साथ और समुदाय में किया जाता है। कई शिक्षकों का मानना है कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में निर्देश देना सरल और सुलभ है। बच्चा पहले से ही भाषा के घरेलू और व्याकरणिक रूपों से परिचित है। अगर उसकी लिपि, व्याकरण और साहित्यिक रूप को स्कूल में नहीं पढ़ाया जाता है तो वह जल्दी से परेशान हो सकती है। वह विभिन्न विषयों को ऐसी भाषा में पढ़-लिखकर आसानी से पर्याप्त समझ प्राप्त कर सकता है। इन्हीं कारणों से मातृभाषा शिक्षा की चर्चा होती है।

राष्ट्रभाषा या अन्तर्राष्ट्रीय भाषा

शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के अलावा एक राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय भाषा का प्रयोग किया जाता है। राष्ट्रभाषा, जो किसी देश के विभिन्न भागों में संपर्क की भाषा है, उनमें से एक है। यह न केवल अपने क्षेत्र या प्रांतों की भाषा है, बल्कि सरकारी कार्यों और सार्वजनिक स्थानों में इसके व्यापक उपयोग के कारण देश की आम भाषा भी बन गई है। भारत में हिन्दी को संवैधानिक स्थान प्राप्त है।

मूल भाषा के बाद भाषा का एक अंतरराष्ट्रीय चरित्र और स्तर होता है। अंतर्राष्ट्रीय भाषा से तात्पर्य विभिन्न देशों द्वारा अपने पारस्परिक व्यापार और आधिकारिक गतिविधियों में उपयोग की जाने वाली भाषा से है। भारत में, अंग्रेजी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा कहा जाता है, हालांकि अब ऐसा नहीं है। अंग्रेजी भाषा की पहुंच विवश होने की हद तक सिमट गई है। ब्रिटिश प्रशासन के दौरान, अंग्रेजी को भारत में शिक्षा की आधिकारिक भाषा घोषित किया गया था, और आज भी कई क्षेत्रों में इसका उपयोग किया जाता है। भारत इस अदूरदर्शिता के परिणामस्वरूप शिक्षा या अन्य क्षेत्रों में कुछ भी उल्लेखनीय हासिल करने में असमर्थ था। वह न केवल अपनी वाणी में बल्कि मातृभाषा की समझ में भी सदा पीछे है।

भारतीय भाषाओं में, राष्ट्रीय भाषा हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग किया जा सकता है। हमारी राय में क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग केवल प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा के माध्यम के रूप में किया जाना चाहिए क्योंकि छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा में तेजी से पढ़ और लिख सकते हैं। हालाँकि, राजनीतिक सरोकारों से ऊपर उठकर, केवल राष्ट्रीय भाषा ही मध्य, माध्यमिक, +2 और कॉलेजों में एक उपयुक्त माध्यम हो सकती है।

ध्यान में रखने के लिए एक अतिरिक्त बात है। उदाहरण के लिए, यदि क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम माना जाता है, तो एक राज्य के छात्र जो अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं और एक राज्य के प्रशिक्षक जो अपनी मातृभाषा में पढ़ाने में सक्षम हैं, उन्हें दूसरे प्रांत में पढ़ने के लिए मजबूर किया जाएगा। यह अपरिहार्य है कि सरकारी सेवाओं में रुकावटें आएंगी। इस प्रकार शिक्षा का क्षेत्रीय विभाजन होगा और प्रान्तवाद का उदय उचित नहीं होगा। प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक विषय के लिए अलग-अलग साहित्य सृजित करने

की आवश्यकता होगी। पंद्रह क्षेत्रीय भाषाओं में किताबें तैयार करने में करोड़ों रुपये खर्च होंगे और एक एकीकृत शिक्षा प्रणाली पूरे देश में लागू नहीं की जाएगी। एक व्यक्ति का कौशल भी एक निश्चित स्थान तक ही सीमित रहेगा। ये सभी स्वतन्त्र राष्ट्र के हित में नहीं माना जा सकता है।मातृभाषासीखने के लिए किसी पाठशाला की जरूरत नहीं पड़ती, बल्कि यह उसे स्वत: ही अपने परिजनों द्वारा उपहार स्वरूप मिलती है। जन्म लेने के बाद मानव जो प्रथम भाषा सीखता है, उसे उसकी मातृभाषा कहते हैं। यह किसी भी व्यक्ति की सामाजिक एवं भाषाई पहचान होती है। इसको बचाकर रखना बेहद आवश्यक है। अगर हम भारत की बात करें तो हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा जरूर है, लेकिन उसके साथ ही हर क्षेत्र की अपनी कुछ भाषा भी है, जिसे बचाकर रखना बेहद जरूरी है, फिर चाहे वह हिंदी हो या बांग्ला, कुड़माली, खोरठा, संथाली, मुंडारी, खड़िया कुडुख, नागपुरी, हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए।

मातृभाषा में शिक्षण बच्चे के मानसिक विकास हेतु बहुत लाभदायक होता है मातृभाषा के द्वारा हम जो सीखते हैं, वह संसार की अन्य किसी भाषा के द्वारा नहीं सीख सकते हैं, किसी भाषा का साहित्य कितना भी धनी क्यों ना हो वह हमारी मातृभाषा के साहित्य से अधिक आवश्यक और आदरणीय नहीं हो सकता।

एक बात और भी स्मरणीय है। वह यह कि यदि प्रादेशिक भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जाये तो एक प्रदेश के विद्यार्थी, जो अपनी ही मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करते हैं,तथा एक प्रदेश के अध्यापक, जो अपनी ही मातृभाषा में पढ़ाने में समर्थ हैं, दूसरे प्रान्त मेंपठन-पाठन का कार्य नहीं कर सकते। सरकारी सेवाओं में भी ऐसा होने से बाधा पड़ना अनिवार्य है। इस प्रकार शिक्षा का प्रादेशिक विभाजन हो जायेगा और प्रान्तीयता का विकास उचित नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक प्रदेश में प्रत्येक विषय के लिए पृथक्-पृथक् साहित्य का निर्माण करना पडेगा। पन्द्रह प्रादेशिक भाषाओं में पस्तकें तैयार करवाने में करोडों रुपयों का व्यय होगा और सारे देश में एक जैसी शिक्षा-पद्धति की स्थापना नहीं हो सकेगी। व्यक्ति की प्रतिभा भी प्रदेश विशेष तक ही सीमित होकर रह जायेगी। इस सबको स्वतन्त्र राष्ट्र के हित में नहीं कहा और माना जा सकता।

उपर्युक्त बुराइयों से बचने के लिए यही उचित है कि मातृभाषा को प्रारंभिक स्तर परही शिक्षा का माध्यम बनाया जाये, क्योंकि छोटी आयु में जो भाषा दिल और दिमाग के जितनी निकट होगी उतनी ही सुचारु रूप से बालकों की शिक्षा होगी। बच्चे की मातृभाषा जीवन से जितना सम्बन्धित होती है, उतना अन्य कोई भाषा नहीं होती। प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात कॉलेज तक शिक्षा का माध्यम राष्ट्रभाषा ज़रूरी होने पर अंग्रेज़ी भाषा भी स्वयं सीख सकते हैं। इसी में देश का वास्तविक हित है। शिक्षा का प्रसार और वास्तविक लक्ष्य भी पाया जा सकता है।

साहिना गाजी

वैज्ञानिक सहायक

एनसीपीओआर की अन्य गतिविधियाँ

राष्ट्रीय दिवस एवं समारोह

भारतीय अंटार्कटिक अनुसंधान स्टेशनों भारती एवं मैत्री में स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ।

ध्वजारोहण

स्वतंत्रता दिवस

श्री मिर्ज़ा जावेद बेग, निदेशक, एनसीपीओआर ने स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर एनसीपीओआर परिसर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया एवं सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दी। एनसीपीओआर द्वारा संचालित विभिन्न अनुसंधान आधारों पर भी स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया।

एनसीपीओआर में ध्वजारोहण

ओआरवी सागर कन्या पर ध्वजारोहण

आतंकवाद विरोधी दिवस

एनसीपीओआर, गोवा में 21 मई, 2022 को आतंकवाद विरोधी दिवस मनाया गया। एनसीपीओआर के निदेशक श्री मिर्जा जावेद बेग ने सभी वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को शपथ दिलाई।

संविधान दिवस

संविधान दिवस 26 नवंबर के अवसर पर शपथ ग्रहण समारोह की झलक।

‘‘स्वच्छ सागर, सुरक्षित सागर’’

गोवा के राज्यपाल महामहिम, श्री पी एस श्रीधरन पिल्लई, ने गोवा के पणजी में मीरामार बीच पर अंतर्राष्ट्रीय तटीय सफाई दिवस - स्वच्छ सागर सुरक्षित सागर अभियान का उद्घाटन किया। गोवा के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत भी इस अवसर पर उपस्थित थे। एनसीपीओआर, गोवा ने 5 समुद्र तटों पर स्वच्छ सागर, सुरक्षित सागर अभियान का आयोजन किया।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी

परिचय - संयुक्त राष्ट्र एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है, संक्षिप्त रूप से इसे कई समाचार पत्र संरा भी लिखते हैं। जिसके उद्देश्य में उल्लेख है कि यह अन्तर्राष्ट्रीय कानून को सुविधाजनक बनाने के सहयोग, अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, मानव अधिकार और विश्व शान्ति के लिए कार्यरत है। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र अधिकार पत्र पर 50 देशों के हस्ताक्षर होने के साथ हुई। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र में 193 राष्ट्र हैं।

इतिहास - प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1929 में राष्ट्र संघ का गठन किया गया था। राष्ट्र संघ बहुत हद तक प्रभावहीन था और संयुक्त राष्ट्र का उसकी जगह होने का यह बहुत बड़ा लाभ है कि संयुक्त राष्ट्र अपने सदस्य देशों की सेनाओं को शान्ति संभालने के लिए तैनात कर सकता है।

संयुक्त राष्ट्र के बारे में विचार पहली बार द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उभरे थे। द्वितीय विश्व युद्ध में विजयी होने वाले देशों ने मिलकर प्रयास किया कि वे इस संस्था की संरचना, सदस्यता आदि के बारे में कुछ निर्णय कर पायें।

24 अप्रैल 1945 को, द्वितीय विश्वयुद्ध के समाप्त होने के बाद, अमेरिका के सैन फ्रैंसिस्को में अन्तराष्ट्रीय संस्थाओं की संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन हुई और यहाँ सारे 40 उपस्थित देशों ने संयुक्त राष्ट्र संविधा पर हस्ताक्षर किया। पोलैण्ड इस सम्मेलन में उपस्थित तो नहीं था, पर उसके हस्ताक्षर के लिए विशेष स्थान रखा गया था और बाद में पोलैण्ड ने भी हस्ताक्षर कर दिया। सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी देशों के हस्ताक्षर के बाद संयुक्त राष्ट्र अस्तित्व में आया।

उद्देश्य-

संयुक्त राष्ट्र के मुख्य उद्देश्य हैं: युद्ध रोकना, मानवाधिकारों की रक्षा करना, अन्तरराष्ट्रीय कानूनी प्रक्रिया , सामाजिक और आर्थिक विकास 6 उभारना, जीवन स्तर सुधारना और बिमारियों की मुक्ति हेतु इलाज, सदस्य राष्ट्र को अन्तरराष्ट्रीय चिन्ताएँ स्मरण कराना और अन्तरराष्ट्रीय मामलों को संभालने का मौका देना है। इन उद्देश्य को निभाने के लिए 1948 में मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा प्रमाणित की गई।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अंग :

1) महासभा (general assembly)

2) सुरक्षा परिषद (security council)

3) आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (economic and social council)

4) प्रन्यास परिषद (trusteeship)

5) अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (international Court of Justice)

संयुक्त राष्ट्र में किसी भी भाषा को शामिल करने की प्रक्रिया -

संयुक्त राष्ट्र में किसी भाषा को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिए जाने के लिए कोई विशिष्ट मापदण्ड नहीं है। किसी भाषा को संयुक्त राष्ट्र में आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल किए जाने की प्रक्रिया में संयुक्त राष्ट्र महासभा में साधारण बहुमत द्वारा एक संकल्प को स्वीकार करना और संयुक्त राष्ट्र की कुल सदस्यता के दो तिहाई बहुमत द्वारा उसे अन्तिम रूप से पारित करना होता है।

संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी -

भारत बहुत लम्बे समय से यह प्रयास कर रहा है कि हिन्दी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं में शामिल किया जाए। भारत का यह दावा इस आधार पर है कि हिन्दी, विश्व में बोली जाने वाली दूसरी सबसे बड़ी भाषा है और विश्व भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है। भारत का यह दावा आज इसलिए और अधिक मजबूत हो जाता है क्योंकि आज का भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र होने के साथ-साथ चुनिन्दा आर्थिक शक्तियों में भी शामिल हो चुका है।

2015 में भोपाल में हुए विश्व हिन्दी सम्मेलन के एक सत्र का शीर्षक 'विदेशी नीतियों में हिन्दी' पर समर्पित था, जिसमें हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा में से एक के तौर पर पहचान दिलाने की सिफारिश की गई थी। हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के तौर पर प्रतिष्ठित करने के लिए फरवरी 2008 में मॉरीशस में भी विश्व हिन्दी सचिवालय खोला गया था।

संयुक्त राष्ट्र अपने कार्यक्रमों का संयुक्त राष्ट्र रेडियो वेबसाईट पर हिन्दी भाषा में भी प्रसारण करता है। कई अवसरों पर भारतीय नेताओं ने संरा में हिन्दी में वक्तव्य दिए हैं जिनमें 1977 में अटल बिहारी वाजपेयी का हिन्दी में भाषण, सितम्बर 2014 में 69वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी का वक्तव्य, सितम्बर 2015 में संयुक्त राष्ट्र टिकाऊ विकास शिखर सम्मेलन में उनका सम्बोधन, अक्तूबर, 2015 में विदेश मन्त्री सुषमा स्वराज द्वारा 70वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा को सम्बोधन 5 और सितम्बर, 2016 में 71वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा को विदेश मन्त्री द्वारा सम्बोधन शामिल है।

हिंदी का अंतरराष्ट्रीय सन्दर्भ-

हिंदी ना केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में बोली जाती है। हिंदी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है। अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर आदि देशों में भी बहुत बड़ी संख्या में भारतीय रहते हैं। ये विकसित देश हैं इसलिए इन देशों में इन लोगों को हिंदी के माध्यम से काम करने के कई साधन मिल जाते हैं। पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, रेडियो, दूरदर्शन आदि के माध्यम से हिंदी के विभिन्न कार्यक्रम तथा शिक्षा में और सांस्कृतिक धरातल पर हिंदी को व्यवहार में लाते हैं।

भारत के पड़ोसी पाकिस्तान और नेपाल जैसे देशों में भी हिंदी समझी और बोली जाती है। पाकिस्तान के लोग उर्दू बोलते हैं लेकिन भाषिक समानता के कारण वे हिंदी भाषा बखूबी समझते हैं। इस तरह हिंदी भाषा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी अध्ययन अध्यापन का कार्य जोरो पर है। उदाहरण के लिए ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, बेल्जियम, जर्मनी, फ्रांस, हंगरी अमेरिका आदि देशों में 100 के करीब अध्ययन केंद्रों में हिंदी के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है। मॉरीशस में 1926 ई. में हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई जिसके द्वारा तिलक विद्यालय की स्थापना हुई और जिसका उद्देश्य था हिंदी के व्याकरण सम्मत पढ़ाई कराना और जो बाद में 1946 में हिंदी भवन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सूरीनाम में भारत वासियों की ओर से देशभर में हिंदी शिक्षण केंद्र स्थापित किए गए हैं। फिजी में पहली भारतीय पाठशाला की स्थापना सन 1916 में हुई। उसके बाद सनातन धर्म सभा, आर्य सभा, आर्य समाज, गुरुद्वारा कमेटी आदि ने अनेक पाठशालाएं खोलें और उनमें हिंदी शिक्षण का कार्य नियमित रूप से प्रारंभ हो गया। नेपाल में त्रिभुवन विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर कक्षा तक हिंदी में अध्ययन की व्यवस्था है। वर्मा में 1918 में हिंदी शिक्षण आरंभ हुआ और हिंदी साहित्य सम्मेलन वर्तमान में भी सक्रिय है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी में साहित्य सृजन भी पर्याप्त हो रहा है। मॉरीशस में सन 1976 में दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ और 1993 में चौथा सम्मेलन हुआ। मॉरीशस सरकार का कला एवं संस्कृति मंत्रालय हर वर्ष विभिन्न भाषाओं के नाटकिय समारोह का आयोजन करता है, जिसमें सबसे अधिक हिंदी के नाटक होते हैं।

ब्रिटेन में भारतीय विद्या भवन महालक्ष्मी मंदिर और आर्य समाज आदि ने साहित्य सृजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। साहित्यकारों में अभिमन्यु अनंत, कुसुम वेदी, श्रीमती उषा राजे और तेजेंद्र शर्मा प्रमुख हैं। हिंदी साहित्य का विश्व के अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है, जिनमें प्रेमचंद का 'गोदान', फणीश्वर नाथ रेणु का 'मैला आंचल' और तुलसीकृत 'रामचरितमानस' प्रमुख हैं।

हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने में सिनेमा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज हिंदी सिनेमा ने विदेशों में भी अपनी पहुंच बनाई है, और हिंदी के वैश्विक परिदृश्य को पूरा किया है।

भारत की राजधानी दिल्ली में 28 अक्टूबर - 30 अक्टूबर 1983 में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन की मुख्य अतिथि महादेवी वर्मा ने दो टूक शब्दों में कहा था - भारत के सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के कामकाज की स्थिति उस रथ जैसी है जिसमें घोड़े आगे की बजाय पीछे जोत दिये गये हों।

अतः इस विशाल बहुभाषी देश के लिए एक राष्ट्रभाषा के चिन्हित करने पर अब पुरजोर प्रयास करना चाहिए तथा यह तर्क अब शिरे से नकार देना चाहिए कि चूँकि भारत के पास क्षेत्रीय भाषाओं का दुनिया का सबसे विशाल संग्रह है, इसलिए कोई एक भाषा नहीं चुनी जा सकती है। गांधी जी ने भी इस संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए एक बार कहा था कि, जब तक हम हिंदी को अपना प्राकृतिक दर्जा नहीं देंगे और प्रांतीय भाषाएं लोगों के जीवन में उनका उचित स्थान नहीं देतीं, तब तक स्वराज की सारी बातें बेकार हैं। अतः अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में हिन्दी के संवर्धन के साथ ही साथ भारत राष्ट्र में भी हिंदी का समुचित संवर्धन करवाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भाषा क्यों होनी चाहिए?

संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को शामिल करने के ठोस कारण हैं। सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण कारण विश्व स्तर पर हिंदी को बोलने वालों की संख्या है। विश्व स्तर पर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा 'चीनी' है। वहीं हिंदी को कुछ विद्वान् दूसरे तो कुछ तीसरे स्थान पर मानते हैं।

हिंदी भाषा सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि उसको व्यवहृत करने वाले लोग कई देशों में फैले हुए हैं। **सूरीनाम, त्रिनिदाद-टोबैगो, नेपाल, गयाना, मॉरीशस, फिजी, भूटान, इंडोनेशिया, बाली, सुमात्रा जैसे देशों में हिंदी महत्वपूर्ण भाषा है ही, विश्व के अन्य देशों में भी बोलने-समझने वालों की अच्छी-खासी संख्या विद्यमान है।** यदि उर्दू भाषा को भी शामिल कर लिया जाए (जो है ही) तो इसमें पड़ोसी देश पाकिस्तान भी जुड़ जाता है। इतने व्यापक स्तर पर प्रयोग होने वाली भाषा, यू.एन. की आधिकारिक भाषा क्यों नहीं होनी चाहिए?

हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता भी इसकी सबसे बड़ी मजबूती है। जैसी बोली जाती है, उसी रूप में ही लिखी भी जाती है। कई वैश्विक भाषाओं की अपेक्षा प्रयोग करने तथा सीखने-सीखाने में सरल और सहज है। हिंदी का शब्द भंडार भी दिन-प्रतिदिन समृद्ध हो रहा है। हर वर्ष कुछ न कुछ हिंदी शब्दों को अंग्रेजी अपने शब्द कोष में शामिल करती रहती है। माने अंग्रेजी का आकर्षण भी हिंदी के प्रति बना हुआ है। औद्योगीकरण और भूमंडलीकरण के परिणाम स्वरूप समूचे विश्व के लिए भारत एक बाजार के रूप में उभरा है। जिसकी वजह से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पाद को बेचने और व्यापारिक संबंध मजबूत करने के लिए अपने कर्मचारियों को हिंदी सिखा-पढ़ा रही हैं। ताकि भारतीय उपभोक्ताओं और उनकी भाषा तथा संस्कृति को समझा जा सके। यही वजह है की विश्व के अधिकांश देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है।

निष्कर्ष -

दिल्ली में आयोजित तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह में महादेवी वर्मा ने कहा था कि, **अंतर्राष्ट्रीय वही हो सकता है, जिसकी राष्ट्र में जड़ें हों। जिसके राष्ट्र में जड़ ही नहीं है, वह क्या अंतर्राष्ट्रीय होगा?** उनकी यह सलाह महत्वपूर्ण है। जब तक हम भारतीय हिंदी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत नहीं करते तब तक उसे वह स्थान नहीं मिलेगा जो अन्य वैश्विक भाषाओं को मिला हुआ है। हमें हिंदी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा बनाना होगा। **जब तक श्रेष्ठम् विचार, श्रेष्ठम् कर्म, श्रेष्ठम् दर्शन, श्रेष्ठम् वैज्ञानिक खोज, श्रेष्ठम् तकनीक हिंदी में प्रगट नहीं होगी, हिंदी विश्व भाषा कैसे बनेगी?** केवल साहित्यिक विकास से कोई भी भाषा विश्व भाषा नहीं बन सकती, उसका चहुमुखी विकास होना चाहिए। जब तक हिंदी रोजगार की भाषा नहीं बनती तब तक वह विश्व भाषा क्या, राष्ट्र भाषा भी नहीं बन सकेगी।

आज का यह दौर प्रत्येक राष्ट्र के शक्ति परीक्षण का है जिसमें अभिव्यक्तियाँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाएँगी तथा जिस राष्ट्र का सम्प्रेषण जितना प्रखर और परिस्थितिजन्य होगा वह बाजी उतनी ही सुगम तौर पर उस देश के हाँथ होगी। अतएव भूमंडलीकरण में भाषाओं की वर्चस्वता का अघोषित व अप्रत्यक्ष लड़ाई जारी है। भारत देश की उभरती आर्थिक शक्तियॉ हिंदी भाषा के द्वारा भी मुखरित हो रही है। हम सबके लिए भविष्य में और भी नई चुनौतियॉ हैं जिसके समाधान के लिए हमें अपनी जुगलबंदी को नया आयाम देनाहोगा। हम भारतीयों को इस बारे में कोई संशय नहीं होना चाहिए कि आगामी वर्षों में भारत विश्व के सबसे शक्तिशाली देशों की भांति संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य होगा और हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं में शामिल होगी। अब देखना यह है कि भारत सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य पहले बनता है या हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा पहले बनती है। ये दोनों लक्ष्य एक-दूसरे के पूरक हैं। आईए, हम सब मिलकर अपनी हिंदी लय को और मधुरता दें और प्रखरता प्रदान करें।

''हिंदुस्तान के माथे की बिंदी, विश्व की आत्मा बने हिंदी।
करो हिंदी का मान, तभी बढ़ेगी देशकी शान।''

कावेरी कुंबार

हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता

प्रस्तावना- भाषा मनुष्य को इश्वर द्वारा दिया गया महान वरदान हैं. पहले मनुष्य संकेतों से, कुछ ध्वनियों से अपना मन्तव्य प्रकट करता था। धीरे धीरे ध्वनि चित्र बने व लिपि का निर्माण होने से बोली को भाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ, भाषा के कारण ही साहित्य, कला, धर्म, संस्कृति और विज्ञान आदि क्षेत्रों की मानवीय उपलब्धियाँ आज सुरक्षित रह सकी हैं।

भारत की भाषायें- भारत एक विशाल देश हैं। उसमें अनेक भाषाएँ प्रयोग की जाती हैं। भारत में बोली जाने वाली अनेक भाषाओं में से पन्द्रह मुख्य भाषाओं को भारतीय संविधान में मान्यता दी गयी हैं।

ये भाषाए तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, बंग्ला, असमिया, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी, कश्मीरी, उर्दू, संस्कृत तथा हिंदी हैं। इनमें हिन्दी को संविधान द्वारा भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में माना गया हैं। राष्ट्रभाषा के लिए उपयोगी हिन्दी- राष्ट्रभाषा बनने के लिए किसी भी भाषा में कुछ विशेषताओं का होना आवश्यक हैं। वह सरल हो, जिससे अन्य भाषा भाषी उन्हें सरलता से सीख सके। वह देश की सभ्यता और संस्कृति को व्यंजित करने वाली हो। उसका विस्तार देश के दूरस्थ विभिन्न प्रदेशों तक हो। उसका साहित्य सम्रद्ध हो। देश के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक वैज्ञानिक तथा शैक्षिक कार्यों के संचालन में उसका उपयोग सफलता के साथ हो सके। निसंदेह हिन्दी इन सभी विशेषताओं से युक्त हैं। और भारत की राष्ट्रभाषा होने के लिए सर्वाधिक उपयोगी हैं। राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का विकास- राष्ट्रभाषा की मान्यता प्राप्त होने पर केंद्र तथा राज्य सरकारों हिन्दी सेवी संस्थाओं तथा हिन्दी प्रेमीजनों ने उसके विकास का पूरा प्रयास किया हैं।

केंद्र में हिन्दी निदेशालय खोला गया हैं. विभिन्न प्रकार शब्दावलियों का निर्माण हुआ हैं. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दकोष तैयार हुआ हैं. उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ हैं। सरकार ने अहिन्दी भाषी कर्मचारियों को हिन्दी सीखने के लिए प्रोत्साहित किया हैं। हिन्दी में टंकण तथा आशुलिपि का विकास भी हुआ हैं। हिन्दी के विकास में गैर सरकारी संस्थाओं का योगदान- किसी भी भाषा का विकास अपनी स्वाभाविक गति से होता हैं। सरकारी प्रयास उसे कृत्रिम रूप से बढ़ावा देते हैं किन्तु उससे विशेष लाभ नहीं होता। हिन्दी की प्रगति में सरकारी प्रयासों की अपेक्षा अन्य व्यक्तियों तथा संस्थाओं का योगदान महत्वपूर्ण हैं। विभिन्न संस्थाएं अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के विकास का कार्य सफलता के साथ कर रही हैं।

सिनेमा तथा दूरदर्शन का योगदान हिन्दी के प्रसार प्रचार में बहुत महत्वपूर्ण हैं। हिन्दी फिल्मों तथा दूर दर्शन के कार्यक्रमों ने देश विदेश में हिन्दी को लोकप्रिय बनाया हैं। हिन्दी विरोध की राजनीति- राष्ट्रभाषा घोषित होने पर हिन्दी का विरोध होने लगा। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी तथा सुनीति कूमार चटर्जी ने यह कहकर हिन्दी का विरोध किया कि उसमें अंग्रेजी का स्थान लेने की क्षमता नहीं हैं। देश की एकता के लिए अंग्रेजी का होना जरुरी हैं। हिन्दी में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा देने के लिए शब्दावली ही नहीं हैं। इसी आधार पर अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी विरोध के आंदोलन चले। लेकिन इन सबके पीछे राजनीति ही कारण रही अन्यथा उपर्युक्त समस्त तर्क निराधार तथा महत्वहीन ही हैं. हिन्दी तो अहिन्दी भाषी जनों में अपना स्थान निरंतर बनाती जा रही हैं। विकास के लिए सुझाव- हिन्दी के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण सुझाव हैं कि उसको अपने नैसर्गिक प्रवाह के साथ बढने दिया जाए। आवश्यकता यह हैं कि हिन्दी को नवीन ज्ञान विज्ञान के अनुरूप विकसित किया जाय। राजकीय कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जावे. हिन्दी में उच्च कोटि के वैज्ञानिक, तकनीकी तथा शास्त्रीय ज्ञान से सम्बन्धित साहित्य की रचना हो। विश्वविद्यालयों तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए।

''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल।''

अतः हमारा कर्तव्य है कि हम राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति में अपना योगदान सुनिश्चित करें. देश की आजादी से पूर्व ही गांधीजी ने कहा था,यदि कोई भाषा भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती है तो वह हिंदी ही होग। बिना राष्ट्र भाषा के कोई भी देश गूंगा ही कहा जाएगा. हिंदी, बंगला, उर्दू, पंजाबी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम, उड़िया सहित कुल 22 भाषाओं को संविधान द्वारा राजभाषा का दर्जा दिया गया हैं, हिंदी के अलावा अन्य सभी स्थानीय भाषाएँ हैं, जिन्हें बोलने वालो की संख्या एक ही राज्य में सिमटकर रह जाती हैं। जबकि हिंदी भारत की एक मात्र भाषा ही होगी, जिन्हें दर्जन भर राज्यों में बोला एवं समझा जाता हैं. यही वजह है कि इन्हें राजभाषा का दर्जा प्राप्त हैं. 14 सितंबर, 1949 के दिन ही भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया थ। मगर बड़े दुःख का विषय है जिस भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा मिलना चाहिए वह अपने ही राज्यों एवं देश में शोषित व् अपमानित हो रही हैं। हिंदी भाषी राज्यों में भी अंग्रेजी का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा हैं। गांधीजी भारत की स्वाधीनता के साथ साथ राजभाषा, राष्ट्रभाषा अथवा सम्पर्क भाषा के रूप में किसी भारतीय भाषा को प्रतिष्ठित देखना चाहते थे।

सत्यजीत सिंह सैनी

संगीता राणे
कार्यालय सहायक

पुरस्कार एवं कार्यक्रम

राजभाषा सम्मान 2022

राजभाषा विभाग,गृह मंत्रालय द्वारा अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली में 18 मई 2022 को आयोजित सम्मेलन में हिंदी में उत्कृष्ट मूलकार्य के लिए संस्थान के वैज्ञानिक डॉ रवि मिश्रा को केंद्रीय गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा ने राजभाषा सम्मान 2022 प्रदान किया।

सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट-2022

डॉ. योगेश रे, वैज्ञानिक 'ई' एनसीपीओआर को वर्ष 2022 के लिए ध्रुवीय विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सचिव, एमओईएस, डॉ एम रविचंद्रन एवं माननीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह की उपस्थिति में श्रेष्ठता प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट) से सम्मानित किया गया।

उत्कृष्टता पुरस्कार- 2022

श्री मिर्जा जावेद बेग, निदेशक एनसीपीओआर को वर्ष 2022 के लिए ध्रुवीय विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए सचिव, एमओईएस डॉ. एम. रविचंद्रन की उपस्थिति में माननीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट- 2021-2022

भारत मौसम विज्ञान विभाग - जलवायु अनुसंधान और सेवा ने वर्ष 2020-21 के दौरान अनुसंधान पोत ''सागर कन्या''द्वारा मौसम संबंधी सराहनीय कार्यों के लिए सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट से सम्मानित किया है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग
India Meteorological Department

योग्यता प्रमाणपत्र
Certificate of Merit

प्रमाणित किया जाता है कि जहाज़ सागरकन्या ने वर्ष 2020-2021 में मौसम विज्ञान संबंधी अत्यंत सराहनीय कार्य किया है।

This is to certify that the Meteorological Work performed by the Ship Sagar Kanya(VTJR) during the year 2020-2021 is highly commendable.

(अ. काश्यपि)
प्रमुख, मौसम पूर्वानुमान विभाग
जलवायु अनुसंधान सेवाएँ का कार्यालय
(A.Kashyapi)
Head,
Weather Forecasting Division
Office of Climate Research and Services

पुणे-411005
दिनांक 5 अप्रैल 2022
Pune-411005
Dated 5th April 2022

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा आयोजित वैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण पुरस्कार

राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र चेन्नई में पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित, हिंदी वैज्ञानिक कार्यशाला में देश के विभिन्न संस्थानो से विभिन्न वैज्ञानिको एवं अधिकारीयों ने भाग लिया। हमारे संस्थान से इस वैज्ञानिक कार्यशाला में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सरत चन्द्र त्रिपाठी एवं रोहित श्रीवास्तव ने प्रस्तुतीकरण दिया। जिसमे उन्हे पुरस्कृत किया गया।

संगीता राणे
कार्यालय सहायक